International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1091-1092

शिक्षा के उद्देश्यों का विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. कौशल जी द्विवेदी
प्राचार्य, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, थाना राजा जी, राजगढ, अलवर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

शिक्षा के उद्देश्य देश एवं काल के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। विभिन्न देशों में विभिन्न कालों पर शिक्षा–उद्देश्य बदलतें रहते हैं। प्राचीन समय में एथेन्स देश में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य अपने देशवासियों का राजनैतिक, बौद्धिक, नैतिक तथा सौन्दर्यात्मक विकास करना था। तत्कालीन शिक्षा इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु रची गई थी। प्लेटों ने शिक्षा के उद्देश्य बतलाते हुए कहा कि शिक्षा को चाहिए कि वह व्यक्ति की निहित शक्तियों का विकास करे। स्पार्टा की शिक्षा व्यवस्था इस लक्ष्य को ध्यान में रखकर की गई थी कि उस देश के नागरिक वीर सैनिक बनें। ''प्रत्येक व्यक्ति अपने लिये नहीं वरन् राष्ट्र के लिये पैदा होता है'' ऐसी स्पार्टावासियों की विचारधारा थी। मध्य युग में शिक्षा पर धर्म का प्रभाव अधिक मात्रा में हो गया। फलतः शिक्षा के उद्देश्य भी धार्मिक हो गये। मानवतावादियों ने उदार शिक्षा को पुनः जाग्रत किया तथा 'स्वतंत्र व्यक्ति' के विकासार्थ शिक्षा की रचना की। ये व्यक्तिगत विकास को प्रमुख समझते थे। कॉमेनियस ने भी व्यक्तिगत उद्देश्यों को प्राथमिकता दी और कहा कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को दैवीय आन्तरिक सुख पहुँचाना होना चाहिये। लॉक महोदय ने शिक्षा के उद्देश्यों का वर्णन करते हुए कहा कि शिक्षा को चाहिये कि वह व्यक्ति की समस्त स्वतंत्र शक्तियों का विकास करे। इन शक्तियों का विकास पुनः अभ्यास करा कर किया जा सकता है। प्रसिद्ध प्रकृतिवाद रूसों ने कहा कि शिक्षा को व्यक्ति की प्राकृतिक शक्तियों का विकास प्राकृतिक विधि से करना चाहिए। रूसो का प्रभाव कान्त पर स्पष्ट रूप से पड़ा फलतः कान्त ने भी शिक्षा के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य छात्र की इस प्रकार सहायता करना होना चाहिये जिससे वह अपना विकास स्वेच्छापूर्वक कर सकें। किन्तु हेगल ने व्यक्तिगत उद्देश्यों की अपेक्षा सामाजिक उद्देश्यों को अधिक प्रधानता दी। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में राष्ट्रीयता का विकास करना चाहिये क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र के लिए है। पेस्तालॉजी ने पुनः व्यक्तिगत उद्देश्यों को प्राथमिकता देते हुए कहा कि शिक्षा का कार्य व्यक्ति को पूर्ण बनाने की दृष्टि से उनकी सुप्त शक्तियों को जाग्रत करना होना चाहिये। हरबार्ट ने शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करते हुए कहा कि शिक्षा का कार्य व्यक्ति को पूर्ण बनाने की दृष्टि से उनकी सुप्त शक्तियों को जाग्रत करना होना चाहिये। हरबार्ट ने शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करते हुए कहा कि शिक्षा को बालक का मुक्त रूप से विकास करना चाहिये। हरबर्ट स्पेन्सर ने शिक्षा में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का समावेश करते हुए कहा कि शिक्षा के द्वारा बालक को पूर्ण–जीवन हेतु तैयार करना चाहिये। वर्तमान युग के शिक्षाशास्त्रियों ने, जिनमें सर पर्सी नन तथा जॉन डीवी प्रसिद्ध हैं, शिक्षा के व्यक्तिगत तथा सामाजिक उद्देश्यों में समन्वय स्थापित करने की चेष्टा की। इस सम्बन्ध में डीवी कहते हैं कि वर्तमान विद्यालयों को व्यक्ति को वर्तमान सामाजिक संसार में पूर्ण–जीवन व्यतीत करने योग्य बनाना चाहिये।

("What the new times demand is a school capable of training its scholars for complete living in the social world of today." - Dewey)

विभिन्न देशों में समय–समय पर शिक्षा के लक्ष्यों का निर्धारण किसी एक विशिष्ट विचारक, शिक्षाशास्त्री या किसी एक संस्था ने नहीं किया और न इनका निर्धारण किसी एक विशिष्ट शिक्षक द्वारा ही किया गया, क्योंकि न तो जनसाधारण ही, और न ही विशेष विचारक ही लक्ष्यों का निर्धारण कर सकते हैं। समाज भी पूर्ण रूप से लक्ष्यों का निर्धारण नहीं कर सकता है क्योंकि समाज को भी शिक्षण प्रक्रिया की सीमाओं को ध्यान में रखना पड़ता है। इसी प्रकार शिक्षा व्यवस्था अकेली ही लक्ष्यों का निर्धारण नहीं कर सकती है क्योंकि उसे तत्कालीन समाज की मान्यताओं को ध्यान में रखना पड़ता है। वास्तविक रूप से शिक्षा के लक्ष्यों का निर्धारण लेखक, वक्ता, सरकारी अधिकारी, विज्ञापनदाता, विधायक, लेखक, समितियाँ, कमेटियाँ, सामाजिक संस्थाएँ, विद्यालय, बहुसंख्यक समुदाय आदि सभी चेतन तथा अचेतन रूप से मिलकर करते हैं।

शिक्षा के उद्देश्यों का वर्गीकरण

शिक्षा के उद्देश्यों के वर्गीकरण की जब बात चलती है, उसके सम्बन्ध में जब हम सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि शिक्षा के उद्देश्यों को सामान्यता दो दृष्टिकोणों से वर्गीकृत किया जाता है। एक दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों को दो प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है : (1) सार्वभौमिक उद्देश्य तथा (2) विशिष्ट उद्देश्य। दूसरे दृष्टिकोण से शिक्षा के उद्देश्यों को दो पृथक वर्गों में विभक्त किया जाता है – (1) वैयक्तिक उद्देश्य तथा (2) सामाजिक उद्देश्य।

सार्वभौमिक उद्देश्य

शिक्षा के सार्वभौमिक उद्देश्य वे उद्देश्य है जो किसी वर्ग, जाति, राष्ट्र या व्यक्ति–विशेष के लिये न होकर सम्पूर्ण मानव–जाति के लिए होते है। इनका स्वभाव सामान्यतया उदार होता है तथा ये मानव में कुछ सहयोग, मानव कल्याण, मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य का विकास आदि। शिक्षा के सार्वभौमिक उद्देश्य सनातन तथा निश्चित होते हैं और इनमें सामान्यतः परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। जहाँ तक सार्वभौमिक उद्देश्यों का प्रश्न है, विश्व के सभी दर्शनों ने इनको स्वीकार किया है क्योंकि सभी दर्शन अन्ततोगत्वा मानव में सार्वभौमिक गुणों का विकास करने पर बल देते है। कोई दर्शन यह नहीं कहता कि मनुष्य में प्रेम, सहयोग न हो या उनका शारीरिक–मानसिक स्वास्थ्य खराब हो।

वैयक्तिक उद्देश्य

शिक्षा के कुछ उद्देश्य वैयक्तिक अथवा विशिष्ट होते हैं। इस प्रकार के उद्देश्य व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों के विकास पर बल देते हैं। यदि कोई राष्ट्र अपनी समस्याओं तथा योजनाओं के सन्दर्भ में अपने नागरिकों में कुछ विशिष्ट योग्यताओं तथा गुणों का विकास करने के लिये शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करता है तो वे भी शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य ही कहलाते है, जैसे – कृषि शिक्षा का प्रसार करना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना आदि। शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण प्रमुख रूप से भौतिक उन्नति को ध्यान में रखकर किया जाता है, जबकि सार्वभौमिक उद्देश्यों का निर्धारण आधारभूत मानवीय मूल्यों अर्थात आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करने के लिए किया जाता है।

सार्वभौमिक एवं वैयक्तिक उद्देश्यों में समन्वय

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि सार्वभौमिक तथा विशिष्ट उद्देश्य एक–दूसरे के विरोधाभासी लगते हैं। एक आधारभूत मानवीय मूल्यों के विकास पर बल देता है तथा दूसरा भौतिक प्रगति को। इतिहास बताता है कि जिस किसी भी समाज ने जब–जब शिक्षा के उद्देश्यों का एकपक्षीय विकास किया है उन समाजों को हानि ही उठानी पड़ी है। जब समाज केवल आध्यात्मिकता की ओर बढ़ता है और अपनी सुरक्षा तथा भौतिक उन्नति की ओर ध्यान नहीं देता तो पड़ौसी–समाज उसे नष्ट कर अपना गुलाम बना लेते हैं। स्पार्टा तथा रोम का इतिहास हमारे सामने है। इसी प्रकार जो समाज अपने आध्यात्मिक मूल्यों को तिलांजलि देकर केवल भौतिक सुखों की ओर दौड़ते हैं, वे समाज कालान्तर में अपनी संस्कृति को भूल जाते है और जब समाज की संस्कृति नहीं रहती है तो समाज का अस्तित्व भी समाप्त हो जाता है। समाज के अस्तित्व, उत्थान तथा उन्नयन के लिए समाज की आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों ही प्रकार की उन्नति होनी चाहिये और इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा के सार्वभौमिक तथा विशिष्ट दोनों ही प्रकार के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाय।

शिक्षा के सार्वभौमिक तथा विशिष्ट उद्देश्यों के साथ इतना ही नहीं है कि उनका निर्धारण किया जाय, अपितु इतना भी है कि इनका सन्तुलित विकास हो। यदि एक पक्ष का अधिक विकास हो तथा दूसरे का कम, तो दोनों में विलम्बना, आ जायेगा और इससे न तो दोनों में समन्वय ही स्थापित हो पायेगा और न ये दोनों एक–दूसरे के पूरक ही हो पायेंगे। इससे अन्यान्य समस्याएँ उठ खड़ी होंगी। इसलिए जब कभी भी इन उद्देश्यों का निर्धारण किया जाय तो यह भी आवश्यक है कि दोनों के मध्य समन्वय भी बनाये रखा जाय।

शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य

शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य को कुछ लोग शिक्षा का सामाजिक तथा नागरिक उद्देश्य भी कहते हैं। इस उद्देश्य के समर्थकों की मान्यता है कि राज्य तथा समाज का स्थान व्यक्ति से बहुत ऊँचा है। इन लोगों का दृढ़ विश्वास है कि व्यक्ति मूलतः सामाजिक प्राणी है तथा समाज से पृथक उसका कोई भी अस्तित्व नहीं है। समाज में रहकर ही वह सुरक्षित तथा जीवित है और समाज में रहकर ही वह अपनी उन्नति तथा प्रगति कर सकता है। समाज में रहकर ही वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, यहीं वह अपना शैशव, बाल्यकाल तथा शेष समस्त जीवन व्यतीत करता है। समाज में रहकर ही वह अपने जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। समाज से ही वह भाषा, विचार, नैतिक गुण, सभ्यता, शालीनता तथा ज्ञान–विज्ञान, कला, कौशल आदि सीखता है। समाज के बिना व्यक्ति कोरी कल्पना है। वास्तव में देखा जाय तो हम पाते हैं कि व्यक्ति ही क्या सम्पूर्ण प्राणी जगत में सभी सदस्य अपने–अपने समाज बना कर रहते हैं। जंगली पशु झुण्डों में देखे जाते हैं, वही उनका समाज होता है। जो अपने समाज से भटक कर अन्यत्र चले जाते हैं, उनका हाल रामू नामक भेडिया बालक जैसा ही होता है, जो केवल भेड़ियों जैसा व्यवहार कर सकता है। समाज की उन्नति से ही व्यक्ति की उन्नति संभव है, इसलिये शिक्षा को चाहिये कि वह व्यक्तिगत उन्नति की अपेक्षा समाज की उन्नति को अपना ध्येय बनाये। समाज की उन्नति से ही सबकि उन्नति होगी। शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य का यही तात्पर्य है कि वैयक्तिकता के स्थान पर सामाजिकता का विकास किया जाये। इससे समाज जो बालक को एक उच्चकोटि का सामाजिक प्राणी तथा अच्छा नागरिक बना सके। यही शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य है।

संदर्भ

1. अवस्थी, डॉ. अमरेश्वर अवस्थी, डॉ. राम कुमारः आधुनिक भारतीय सामजिक–प्रकाशन एवं राजनीतिक चिन्तन, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार (1961)
2. मालती सारस्वतः भारतीय शिक्षा का विकास और समस्यायें, रस्तोगी, पब्लिकेशन शिवाजी रोड, मेरठ
3. लाल, रमन बिहारीः शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी, पब्लिकेशन शिवाजी रोड, मेरठ
4. जायसवाल, डॉ. सीतारामः पाश्चात्य शैक्षिक विचार धारा का तथा भारतीय शिक्षा का विकास
5. गुप्ता, डॉ. एस.पी.ः भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याऐं, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद 1995